अशोक के 'धम्म' की विशेषता

संसार के इतिहास में अशोक के धर्म विजय की नीति एक अभूतपूर्व घटना है, उसमें भेरीघोष के स्थान पर धर्मघोष की स्थापना हुई। उसके दिग्विजय के स्थान पर धर्म विजय का आदर्श प्रस्तुत किया गया।

अशोक के अभिलेखों में 'धम्म' शब्द का कई बार वर्णन आया है। किन्तु इस धम्म शब्द का सही अर्थ क्या है इस बात पर विद्वानों में बड़ा ही मतभेद है। फ्लीट महोदय का मत है कि अशोक ने जिस धम्म का प्रतिपादन किया है वह वस्तुतः राज धर्म था। भंडारकर, सैनार्ट, हुल्श ने अशोक के धम्म को उपासक बौद्ध धर्म कहा है। डा० स्मीथ और डा० आर० के० मुखर्जी के मतानुसार अशोक धर्म सर्वभौम धर्म था। टॉमस अशोक के धर्म को बौद्ध धर्म नहीं मानते हैं। इस प्रकार विद्वानो में काफी मतभेद है किन्तु अशोक के उल्लेखों में उल्लेखित धम्म संबंधित सभी बातों का यदि निरूपण किया जाय तो 'धम्म' का रूप समझा जा सकता है।

स्तंभलेख 2 और 7 में अशोक वो गुण बतलाते हैं जो धम्म के उपादान हैं - उपासिनव पापहीनता, बहुकयान - बहुकल्याण, दया, दान, सच, पवित्रता, मृदुता। पर इन गुणों को व्यवहार में कैसे लाया जायेगा अशोक इस संबंध में कर्तव्यो की गणनाएँ करता है जो विभिन्न लेखो में थोड़ा-थोड़ा भिन्न है। अपने धम्म के अन्यान्य तत्वों का उल्लेख करते हुये अपने द्वितीय शिलालेख में कहता है कि माता-पिता की उचित सेवा, सभी प्राणियो के प्रति आदर भाव तथा गुरूओ का सत्कार ही श्रेयस्कर है। इन धर्म गुणों की वृद्धि होनी चाहिये तथा संबंधियो से उचित व्यवहार उत्तम है।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार शिला प्रज्ञापन में वह दान यानि सामान्यदान और धम्मदान मे अन्तर प्रकट करता है। वह बतलाता है कि 'धम्मदान' पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, भाई - भाई को और वास्तव मे तो प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी को धम्मदान कर सकता है। ग्यारहवें शिलालेख में अशोक अपने धम्म के अन्यान्य तत्वो का उल्लेख करता है। दास और भत्यो तथा वेतन भोगी सेवको के साथ उचित व्यवहार, माता पिता की सेवा, मित्र-परिचितो, संबंधियो, ब्राह्मणो, श्रमणो, साधुओ के प्रति उदारता, प्राणियो में संयम, पशु - बलि से विरक्तता वर्णित है।

अशोक ने तेरहवें शिलालेख में धम्म विजय को ही वास्तविक विजय माना है। वह प्रेम से सुरभित होता है। इन सारी विशेषताओ को देख कर यह स्पष्ट होता है कि अशोक का धम्म रूढ़िवादी, दर्शन मूलक, कर्मकाण्डवादी आदि न था। वह तो सरल, व्यवहारिक. विशुद्ध और सर्वग्राह्य आचार तत्वो से संबद्ध था। फिर भी उसके धर्म का मतलब इतना ही नहीं है बल्कि ये गुण तथा आचरण उसके विचारक रूप हैं। अशोक के धम्म का एक निर्देशात्मक पहलू भी है। इसके अन्तर्गत अशोक ने ऐसे दुर्गुणो एवं कुवृतियों का उल्लेख किया है जिससे धर्म के अनुसरण मे विघ्न उत्पन्न होता है ये है :- उग्रता, निठुलिय (निष्ठुरता), क्रोध, मान, ईर्ष्या

ये सभी दुर्गुण अशोक द्वारा प्रस्तुत एक शब्द आसिनव (पाप) से व्यक्त हो जाते हैं। किन्तु आसिनव की चर्चा व उसकी परिभाषा हमे स्तंभलेख तृतीय से प्राप्त होता है। इसमें वर्णित है कि जो व्यक्ति आसिनव से दूर रहता है वह उपर्युक्त कुवृतियो से भी छुटकारा पा लेता है। अशोक ने इस आत्म निरीक्षण द्वारा अपने आसिनव को पहचानने और उसे नष्ट करने की

Scanned with CamScanner

दी। अशोक ने अपने संयम एवं भाववृति को काफी महत्व दिया है। बारहवें शिलालेख में विभिन्न धर्मों के प्रति उसकी सच्ची भावना का चित्रण है। उसने कहा है कि अपने धर्म के प्रति आदर और दूसरे धर्म की निंदा नहीं करनी चाहिये।

प्रत्येक धर्म के दो रूप होते हैं कर्मकाण्ड मूलक एवं आचार मूलक। जिसमे कर्मकाण्डमूलक को हतोत्साहित एवं आचारमूलक रूप को प्रोत्साहित। अपने नौवे अभिलेख में अशोक ने धम्म मंगल करने की बात कही है। जिसमे गुरूजनो का आदर, दास एवं सेवको से मृदुल व्यवहार साथ ही सभी प्राणियो के प्रति सहज व दया को प्राथमिकता दी है। अशोक का धम्म मानव जगत के लिये ही नहीं वरन सभी प्राणियो के लिये था।

इसप्रकार अशोक का धम्म सामाजिक नीतिशास्त्र का एक व्यवहारिक संहिता है। यह एक नैतिकधर्म है। उसने प्रसार एवं प्रचार के लिये जो कार्य किये वे उल्लेखनीय हैं।

कलिंग युद्ध के हिंसात्मक परिणाम को देखकर अशोक के अन्दर धर्मकामना और धर्मशीलम् की भावना जागृत हुई और उसने धर्म विजय को अपनाया। इन बातो का वर्णन अशोक के तेरहवें शिलालेख में स्पष्ट मिलता है। अपने विहार यात्रा के स्थान पर अशोक ने धर्मयात्रा प्रारंभ किया। जिससे लोगों के हृदय मे स्वर्ग प्राप्त करने की कामना बढ़े और उसके लिये वे धर्म का अनुसरण करे।

अशोक ने अपने धम्म के अनुशासन को

Scanned with CamScanner

प्रकाशित करवाया एवं उसके प्रचार के लिये पदाधिकारी नियुक्त किये। तृतीय शिलालेख के अनुसार राजुको, प्रादेशिक व युक्तो को अपने-अपने क्षेत्र में प्रति पाँच वर्ष में राज्य का दौड़ा करने का आदेश दिया है। साथ ही प्रजा को धर्म उपदेश की बात भी कही है।

धर्म की स्थापना के लिये धम्ममहामात्यो की नियुक्ति की जो धम्म का आचरण करने वालों के सुख व हित के लिये प्रयुक्त था। धर्म श्रावण को अशोक ने धम्म प्रचार के साधनों में प्रथम स्थान दिया इसके लिये पुरूष एवं राजुक नामक अधिकारी को उत्तरदायी बनाया गया। 7वें स्तंभ लेख से ज्ञात होता है कि समय-समय पर अशोक भी जनता को धम्म संदेश देता था।

अहिंसा अशोक के धम्म का मूलमंत्र था। पाँचवें स्तंभलेख में अनेकानेक पशु-पक्षियों का वर्णन है जिसका वध दण्डनीय था। जन कल्याण में बहुत सारे काम किये गये थे। स्तंभ लेख में इसका वर्णन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इतों का कार्य धम्म शासन का प्रचार करना भी था। अपने इस धम्म का प्रचार अशोक ने न सिर्फ भारत में किया बल्कि विदेशो में भी खूब प्रचार करवाया।

इसप्रकार जिस धम्म को अशोक ने जनहित में जारी किया उसका अनुशरण उसने स्वयं भी आजीवन किया। साथ ही धम्म का प्रसार-प्रचार भी सफलता पूर्वक किया।

Scanned with CamScanner